प्रकाशन तिथि : 15 अगस्त, 2020
प्रेषण तिथि : 19 अगस्त, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 11 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'छोटी सी साधना उपासना बन जाए'

श्री क्षत्रिय युवक संघ में जिस दिन हम लोग आते हैं तब ही हमें संघ के दैनिक एक घंटे के कार्यक्रम 'शाखा' के बारे में बताया जाता है। शिक्षक हमको पहला ही पाठ यही पढ़ाता है कि शाखा में नियमित और निरन्तर आना चाहिए। जब तक शिक्षक परिवर्तन नहीं करे, तब तक वही समय रहे, यही नियमितता है। सतत आते रहें, यह निरन्तरता है। इसमें किसी प्रकार का अवरोध नहीं आए तो यह छोटी सी साधना उपासना बन जाती है। पूज्य नारायणसिंह जी संघ के इसी कार्य को उपासना स्वीकार कर पूज्य तनसिंह जी ने जो दिया उस पर निर्भर रहे। पूज्य तनसिंह जी के देहावसान के बाद उनमें हुए आध्यात्मिक अवतरण पर हम उनसे पूछते थे कि आपने ऐसा क्या उपाय किया कि आप में यह शुभ घटा तो उनका उत्तर होता था कि

जैसा तनसिंह जी ने कहा वैसा किया और वह था संघ कार्य।

30 जुलाई को संघ के तृतीय संघ प्रमुख पूज्य नारायणसिंह जी रेड़ा के 81वें जन्म दिवस पर आयोजित वर्चुअल कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि पूज्य नारायणसिंह जी कहा करते थे कि यदि आप चाहते हैं कि मेरे जीवन में जो घटित हुआ वह आपके जीवन में भी घटित हो तो आप भी ऐसा ही संकल्प जगाएं। तनसिंह जी की आज्ञा का पालन करें, संघ कार्य करें, स्वयं तपस्वी बनें और लोगों का मार्गदर्शन करें। श्रेष्ठ व्यक्ति वही होता है जो अपने जीवन में श्रेष्ठता का अवतरण करता है और लोगों का मार्गदर्शन करता है। पूज्य नारायणसिंह जी कहा करते थे कि जो मैं कर सकता था वह मैंने किया और जो आप कर सकते हैं वह आप करें, तनसिंह जी सदैव आपके पीछे खड़े दिखाई देंगे। आपको अनुभूति होगी कि तनसिंह जी यहीं हैं हमारे बीच, कहीं गए नहीं हैं और उनके सानिध्य में ही हम इस कार्य को कर सकते हैं, यही हमारी उपासना है।

माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि उन्होंने संघ को अपने जीवन में उतारा और वही अनुभूत बात हमें बताई। उन्होंने कभी कोई अनर्गल बात कही हो ऐसा मुझे स्मरण नहीं है। सब कुछ तारतम्य वाला उनका जीवन था और वे तारतम्य वाली बात ही कहते थे। उनके ऐसे जीवन के प्रभाव से हमारे जीवन में भी तारतम्य उतरा, ऐसा हमने अनुभव किया। संघ की शाखाओं, शिविरों, दैनिक जीवन में उनके साथ बिताए पलों को याद करते हैं तो सोचते हैं कि हमारा जीवन उनके जैसा नहीं बन सका, इसका पश्चाताप होता है और वैसा बनने की उत्कंठा भी पैदा होती है क्यों कि हम भी उसी राह के राही हैं, जो उन्होंने किया, वही हम करना चाहते हैं। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि महाभारत के युद्ध के बाद सिंहासनरुढ महाराज युधिष्ठर ने भी अंत में कहा कि मैं सिंहासन का त्याग करता हूं क्यों कि जो त्याग में सुख है वह भोग में नहीं है। यह हम भी अनुभव करते हैं, जब थोड़ा सा भी त्याग करते हैं तो अन्दर ही अन्दर एक प्रसन्नता होती है कि मैंने कोई सद्कर्म किया है। किसी भी वस्तु का उपयोग करते हुए यह स्मरण रहना चाहिए कि यह सब भगवान का है और भगवान ने मुझे इसका सदुपयोग करने के लिए प्रदान किया है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'दुर्गादास जी थे पूज्य तनसिंह जी की प्रेरणा'

संसार का नियम है, जो आता है वह जाता है। लेकिन जो संसार के लिए जीकर जाते हैं उनका आत्म कल्याण तो होता ही है साथ ही वे संसार का भी कल्याण कर जाते हैं। ऐसा ही दुर्गादास जी का जीवन था। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। पूज्य तनसिंह जी ने उन्हें आराध्य माना। वे उनके आदर्श थे। उन्होंने त्यागमय जीवन जिया और जो त्याग कर सकता है वही क्षत्रिय बन सकता है। हमारे पूर्व पुरुषों ने ऐसा त्याग किया और इसीलिए उनका इतिहास है। इन दिनों इतिहास को भी मिटाने का प्रयास हो रहा है लेकिन दुर्गादास को मिटाया नहीं जा सकता। मरता वही है जिसको अपने जीवन पर पश्चाताप हो, संतुष्टि नहीं हो। दुर्गादास जी का पूरा जीवन एक संतुष्टि का जीवन है, त्याग का जीवन है, समर्पण का जीवन है, इसीलिए उनको कोई क्या मिटाएगा।

जोधपुर की तनायन शाखा द्वारा 2 अगस्त को श्रावण शुक्ला चतुर्दशी के अवसर पर आयोजित दुर्गादास जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि दुर्गादास जी गीता में वर्णित योग भ्रष्ट अवस्था के योगी थे और अपना अधूरा कार्य पूरा करने के लिए जन्मे थे। गीता का संदेश है कि जिनकी सिद्धि में कोई कमी रह जाती है वे पुनर्जन्म लेकर अपनी यात्रा पूर्ण करते हैं, दुर्गादास ऐसे ही योगी थे। श्री क्षत्रिय युवक संघ यही संदेश देता है कि अपनी परवाह किए बिना लोक कल्याण हेतु अपने कर्तव्य में रत होना चाहिए। दुर्गादास ऐसे ही महापुरुष थे इसलिए तनसिंह जी को भा गए।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'अपने उत्तरदायित्व के बोध की रक्षा करें'

हमारा ध्येय वाक्य है 'अपने नेता की आज्ञा पर, मरना ध्येय हमारा हो।' हमारा नेता हमारे जीवन में जो अवतरण देखना चाहता है यदि हम उसका प्रयत्न नहीं करते हैं तो हम राष्ट्र भक्त नहीं हैं, स्वयंसेवक भी नहीं हैं। लेकिन यह एक दिन में संभव नहीं है, एक दिन में अभ्यास से जीवन नहीं बनता, इसीलिए संघ नियमित अभ्यास की बात करता है। यह अभ्यास नियमित और निरन्तर जारी रहे, यह हमारा उत्तरदायित्व है। रक्षा बंधन के इस पर्व पर हमें हमारे इस उत्तरदायित्व का बोध हो और हम अपने-अपने उत्तरदायित्व बोध की रक्षा करें।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'बदलते दृश्य' में बीकानेर राज्य के संस्थापक बीकाजी का उल्लेख किया है। इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

मारवाड़ के स्वामी राव जोधा जी की सांखली रानी नौरंग दे से वि.सं. 1495 को बीका जी का जन्म हुआ। बाल्यकाल से ही बीकाजी निर्भीक, महत्वाकांक्षी व कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे। युवावस्था के प्रारंभिक वर्षों में एक दिन जब दरबार में बीका जी अपने काका कांधल जी के साथ धीमे स्वर में बातें कर रहे थे, तब जोधा जी ने हास्य के लहजे में कहा कि 'आज काका-भतीजा क्या सलाह कर रहे हो, कोई नया ठिकाना जीतने की योजना बना रहे हो क्या?' कांधलजी ने उत्तर दिया कि आपके अशीर्वाद से कोई नया राज्य भी स्थापित हो जाएगा। उन दिनों जांगलू का नापा सांखला भी जोधपुर आया हुआ था, उसने कांधलजी और बीकाजी को सलाह दी कि जांगल प्रदेश बिलोचों के आक्रमण से कमजोर हो गया है और आपके पास वहां अपना अधिकार स्थापित करने का यह अच्छा अवसर है। राव जोधा जी की आज्ञा प्राप्त कर बीकाजी अपने काका कांधल जी, भाई बीदा जी, नापा जी सांखला, पडिहार बेला, महत्ता लाला और कुछ अन्य विश्वसनीय साथियों के साथ जोधपुर से प्रस्थान कर जांगल प्रदेश की ओर आए। इस समय बीकानेर (जांगल प्रदेश) में अनेक छोटे-छोटे शासक शासन कर रहे थे। उत्तर में जोहियों (प्राचीन यौधेय) का शासन था। छापर-द्रोणपुर का प्रदेश जो मोहिलवाटी कहलाता था। मोहिलों (चौहान वंश की एक शाखा) के अधिकार में था। जांगलू और उसके आसपास के 84 गांवों पर सांखलों का अधिकार था और बिलोचों के लगातार आक्रमण से कमजोर हो चुके थे। बीकानेर के पश्चिमोत्तर का सारा प्रदेश भाटियों के अधिकार में था। बीकानेर के आसपास के अनेक गांव जाटों के विभिन्न कबीलों के अधिकार में थे।

सर्वप्रथम राव बीका देशनोक पहुंचे और करणी जी का अशीर्वाद प्राप्त किया। वहां से चांडासर और दूसरे अन्य स्थानों पर अधिकार करते हुए कोडमदेसर पहुंचे जहां स्वयं को उस क्षेत्र का शासक घोषित किया। फिर सांखलों के सभी गांवों को अपनी अधीनता में लाकर राज्य विस्तार किया। उस समय पूगल पर भाटी राव शेखा का शासन था। करणीजी की सलाह से राव बीका पूगल गए, वहां जाने पर उन्हें पता चला कि राव शेखा को मुलतान के सूबेदार ने कैद में कर रखा है। राव शेखा की रानी के आग्रह पर राव शेखा को कैद से छुड़ाने के लिए राव बीकाजी ने मुलतान के लंघो पर आक्रमण किया, युद्ध में लंघो की पराजय हुई, राव शेखा को कैद से छुड़ा लिया गया, विजयोपरांत राव बीका ने पूगल जाकर राव शेखा की पुत्री रंगकुंवरी से विवाह किया। अब बीकाजी ने कोडमदेसर के पास गढ बनवाने का निश्चय किया, जिसका भाटियों ने विरोध किया और जैसलमेर के रावल केहर के पुत्र कलिकर्ण को, जो कि स्वयं वृद्धावस्था में था, बीका पर चढा लाए, घमासान युद्ध हुआ जिसमें कलिकर्ण अपने 300 साथियों सहित वीरगति को प्राप्त हुआ, बीकाजी को विजय प्राप्त हुई। उस स्थान के लिए भाटियों का विरोध देखते हुए नापाजी सांखला की सलाह से रातीघाटी नामक स्थान पर वि.सं. 1542 में गढ़ की नींव रखी।

पनरे सै पैंतालवे, सुद वैशाख सुमेर।
थावर बीज थरपिपयो, बीके बीकानेर।।

उस समय बीकानेर के पास शेखसर का इलाका गोदारा जाट पाडू तथा भाडग सारण जाट पूला के अधीन था, पूला की पत्नी मल्की के कारण दोनों में वैमनस्य बढ़ गया। सारण पूला, पाडू गोदारा के विरुद्ध सिवाणी के शासक नरसिंह को ससैन्य ले आया। पाडू सहायता के लिए बीकाजी के पास गया। बीकाजी ने सिधमुख के पास नरसिंह को जा घेरा और एक वार से ही उसको यमलोक पहुंचा दिया, यह देख उसकी सेना भाग खड़ी हुई। अब जाटों के सभी कबीलों ने आकर बीका जी की अधीनता स्वीकार कर ली। उसके बाद राव बीका ने सिंधाणे पर चढ़ाई कर जोहियो को परास्त कर अपनी अधीनता में किया। हिसार के पठानों को भी परास्त किया, बाघोड़ो, भूट्टों व बिलोचो को भी परास्त कर अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। राव जोधा ने छापर-द्रोणपुर का इलाका बैरसल मोहिल से लेकर अपने पुत्र बीदा को दे दिया था। बैरसल अपने भाई नरबद के साथ दिल्ली बहलोली लोदी के पास सहायता के लिए गया। बहलोल लोदी ने हिसार के सूबेदार सारंग खां को सेना देकर उनके सहयोग के लिए भेजा, बीदा को छापर द्रोणपुर छोड़ना पड़ा, जिस पर बैरसल का वापिस अधिकार हो गया। बीदाजी सहयोग प्राप्त करने के लिए राव बीकाजी के पास पहुंचे, बीकाजी ने ससैन्य सारंग खां पर आक्रमण के लिए चले, युद्ध में बैरसल और नरबद मारे गए और सारंग खां युद्ध क्षेत्र से भाग गया, राव बीकाजी ने छापर-द्रोणपुर पर पुनः बीदाजी का अधिकार करवा दिया। इस युद्ध के बाद कांधलजी साहवा रहने लगे और सारंग खां के क्षेत्र हिसार में लूटपाट करने लगे, ऐसे ही एक अवसर पर सारंग खां ने सेना सहित कांधलजी को घेर लिया। कांधलजी अपने पुत्रों राजसी, नींबा तथा सूरा और कुछ सैनिकों के साथ सारंग खां की विशाल सेना से वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए। जब यह समाचार बीकाजी को मिला तो उन्होंने सारंग खां को मारने की प्रतिज्ञा की और सेना सहित कूच किया, जोधाजी भी अपने भाई का बदला लेने के लिए बीका जी के साथ द्रोणपुर में आ मिले। सारंग खां भी अपनी सेना सहित आगे बढ़ा और गांव झांस (झांझल) में दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध हुआ, सारंग खां की सेना प्रतिशोध की भावना से भरी राठौड़ सेना के सामने टिक ना सकी, सारंग खां बीका के पुत्र नरा के हाथों मारा गया। लौटती सेना के द्रोणपुर में डेरे हुए जहां राव जोधा जी ने बीकाजी से वचन लिया कि तुमने नया राज्य स्थापित कर लिया अतः पैत्रक राज्य जोधपुर के लिए दावा मत करना। पिता की आज्ञा शिरोधार्य करते हुए कहा कि मैं कभी जोधपुर पर दावा नहीं करूंगा पर अब आपका ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते राजनीक चिह्न और आपकी ढाल-तलवार मुझे मिलनी चाहिए, जोधाजी ने बीकाजी की इस बात को स्वीकार किया। जोधाजी की मृत्यु के बाद जब बीकाजी ने इन वस्तुओं की मांग की तो सूजा जी ने देने से मना कर दिया तो राव बीकाजी ने जोधपुर पर चढ़ाई कर दी और गढ़ को घेर लिया। हाडी रानी माता जसमा दे ने बीकाजी को ये सभी वस्तुएं देकर पारिवारिक संघर्ष को टाला। अपने भाई दूदा जी की सहायता के लिए बीकाजी ने अजमेर के सूबेदार मल्लू खां पर आक्रमण किया जिसने डर कर बीकाजी से सुलह कर ली और मेड़ते से अपनी सेना हटा ली। राव बीकाजी का अंतिम आक्रमण रेवाड़ी पर था जिसमें भी उन्हें विजय प्राप्त हुई। वि.सं. 1561 को बीकाजी का देहान्त हुआ। अपने पिता के कहे हुए एक कथन को जीवन का ध्येय बना कर उन्होंने एक विशाल नवीन राज्य की स्थापना की जिसकी सीमाएं जैसलमेर, बहावलपुर, पंजाब और हिसार से लगती थी। राव बीकाजी उदार हृदय के स्वामी थे, उनसे जिसने भी सहायता मांगी, सदैव सहयोग दिया।

- खींवसिंह सुल्ताना

संदर्भ : 1. बीकानेर राज्य का इतिहास (गौरीशंकर हीरीचंद ओझा)।
2. बीकानेर राज्य का संक्षिप्त इतिहास (दीनानाथ खत्री)।

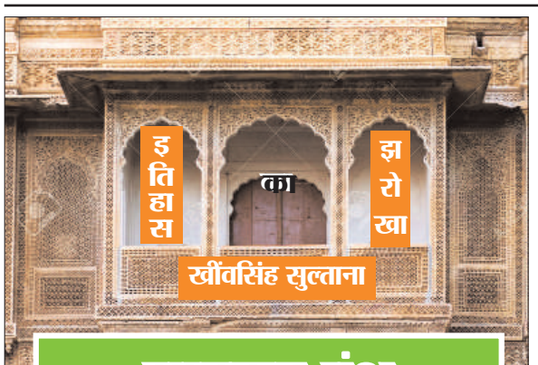

राष्ट्रकूट वंश

गोविन्द तृतीय के बाद उसका पुत्र अमोधवर्ष शासक बना। शासक बनते समय वह अल्पव्यस्क था जिसका लाभ उठाने के लिए वेंगी के चालुक्य शासक विजयादित्य द्वितीय के नेतृत्व में उसके अधीनस्थ कुछ सामन्तों ने विद्रोह किया। इन परिस्थितियों में अमोधवर्ष की सहायता उसके चाचा गुजरात के वायसराय कर्क ने की और विद्रोह को धीरे-धीरे दबा दिया। राज्य में शान्ति और व्यवस्था स्थापित करने के बाद 830 ई. में अमोधवर्ष ने वेंगी पर आक्रमण किया। युद्ध में विजयादित्य परास्त हुआ और कुछ समय के लिए वेंगी पर राष्ट्रकूटों का शासन हो गया। कर्क के बाद उसके पुत्र ध्रुव के नेतृत्व में गुजरात के राष्ट्रकूटों ने अमोधवर्ष की सत्ता को चुनौती दी। दोनों परिवार में 25 वर्ष तक संघर्ष चलता रहा। अंत में अमोधवर्ष के सेनापति वकेय ने गुजरात के राष्ट्रकूटों की शक्ति को पूर्णतया नष्ट कर दी। सिरूर के लेख में उसे अंग, बंग, मगध, मालवा और वेंगी का विजेता बताया गया है। वह अपने पूर्ववती राष्ट्रकूट शासकों के समान योग्य नहीं था, फिर भी उसने दीर्घकाल तक लगभग 64 वर्ष (814-878 ई.) तक शासन किया। वह शान्त प्रकृति का था जिसकी रुचि युद्ध की अपेक्षा कला, साहित्य और धर्म में थी। उसने मान्यखेत नामक नया नगर बसाया और उसे राजधानी बनाया। उसने कन्नड भाषा के अत्यधिक प्रोत्साहन दिया। वह स्वयं साहित्य रचियता था, साथ ही उसके दरबार में अनेक विद्वान आश्रय पाते थे जिनमें 'आदिपुराण' का रचियता 'जिनसेन' प्रमुख था। सेनानायक के रूप में भले ही वह ध्रुव या गोविन्द के समान नहीं था, परन्तु एक शासक के रूप में वह महान था।

अमोधवर्ष के बाद उसका पुत्र कृष्ण द्वितीय शासक बना। कृष्ण द्वितीय का शासन काल संघर्षमय ही रहा। कृष्ण द्वितीय के समकालीन प्रतिहार शासक मिहिरभोज से उसका अनेक बार संघर्ष हुआ जिसमें उसे कभी पराजय तो कभी विजय प्राप्त हुई। कृष्ण द्वितीय का वेंगी के चालुक्यों के साथ दीर्घकालीन संघर्ष हुआ। उसे वेंगी के चालुक्य शासक विजयादित्य तृतीय ने परास्त किया। पराजित कृष्ण को भागकर मध्यभारत के चेदि शासक शंकरगण के पास शरण लेनी पड़ी, बाद में चालुक्य शासक की अधीनता स्वीकार करने पर उसे अपना राज्य पुनः प्राप्त हो गया। चालुक्य शासक भीम प्रथम के साथ भी उसका संघर्ष हुआ जो अनिर्णित रहा। कृष्ण द्वितीय का सुदुर दक्षिण में चोलो के साथ भी युद्ध हुआ लेकिन उस युद्ध में भी कृष्ण द्वितीय को पराजय का सामना करना पड़ा। कृष्ण द्वितीय ने 878 ई. से 914 ई. तक शासन किया। कृष्ण द्वितीय के जीवनकाल में ही उसके पुत्र की मृत्यु हो जाने के कारण उसके बाद उसका पौत्र इन्द्र तृतीय 914 ई. में शासक बना। शासक बनते ही उसे मालवा के परमार शासक उपेन्द्र के आक्रमण का सामना करना पड़ा, इन्द्र तृतीय ने युद्ध में सेना का मनोबल बढ़ाते हुए अत्यन्त पराक्रम का परिचय दिया और विजय प्राप्त की। इसके उपरान्त इन्द्र तृतीय ने प्रतिहार शासक महीपाल के विरुद्ध अभियान किया और उसे पराजित कर राजधानी कन्नौज पर अधिकार कर लिया। इन्द्र तृतीय के पुनः दक्षिण लौटते ही महीपाल ने पुनः कन्नौज पर अधिकार कर लिया। चालुक्य शासक भीम प्रथम के कमजोर उत्तराधिकारी विजयादित्य चतुर्थ के समय इन्द्र तृतीय ने वेंगी पर आक्रमण किया, युद्ध में विजयादित्य चतुर्थ मारा गया और वेंगी पर इन्द्र तृतीय ने अपने आश्रित युधामल्ल को वहां का शासक बना दिया। इस प्रकार कृष्ण द्वितीय के समय राष्ट्रकूट प्रतिष्ठा को जो धक्का लगा, इन्द्र तृतीय ने अपनी विजयों से राष्ट्रकूट गौरव को पुनः प्रतिष्ठित कर दिया। इन्द्र तृतीय ने 929 ई. तक शासन किया।

संभागीय समीक्षा बैठकें संपन्न

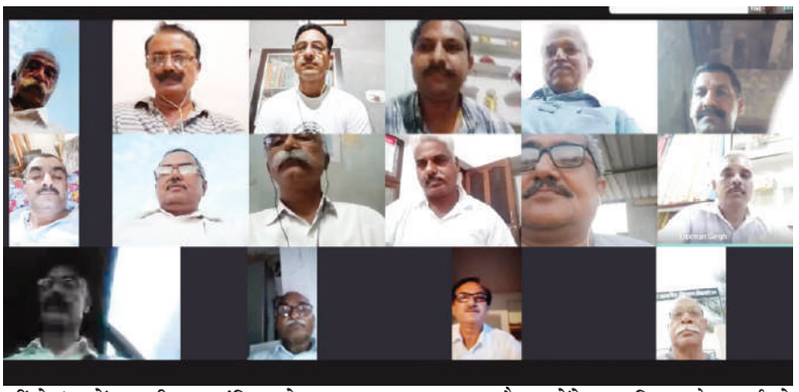

19 जुलाई को माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में संघ के दायित्वाधीन सहयोगियों की वर्चुअल बैठक के बाद शुरू हुई संभागीय समीक्षा बैठकें 5 अगस्त को जैसलमेर संभाग की बैठक के साथ संपन्न हुई। 30 जुलाई को पूज्य नारायणसिंह जी जयंती कार्यक्रम के बाद इन वर्चुअल बैठकों का दूसरा दौर प्रारम्भ हुआ। दूसरे दौर में 31 जुलाई को महाराष्ट्र संभाग की बैठक संपन्न हुई। 1 अगस्त को पोकरण संभाग की बैठक हुई, 2 अगस्त को मध्य गुजरात संभाग की एवं 3 अगस्त को महेसाणा संभाग की बैठक संपन्न हुई। 4 को गोहिलवाड़ संभाग की एवं 5 अगस्त को जैसलमेर संभाग की बैठक हुई। इन बैठकों में विगत बैठकों की तरह सम्पर्क एवं सक्रियता पर महत्व देते हुए संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने लिखा है 'माली आओ नित्य सींचो।' हमें उनकी इस पंक्ति को समझकर हमारे शिक्षक से ऐसा आह्वान करना चाहिए। हमें स्वयं हमारे शिक्षक को निरन्तर हमारा सींचन करने का आमंत्रण देना चाहिए और इसके लिए उनसे नियमित व निरन्तर सम्पर्क आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हमारे सम्पर्क से दो तरफा सक्रियता आती है। प्रथम तो जो सम्पर्क कर रहा है वह सक्रिय होता है एवं दूसरी तरफ जिससे सम्पर्क किया जा रहा है वह सक्रिय होता है। इस प्रकार सम्पर्क से बढ़ने वाली यह परस्पर सक्रियता हमारी साधना का सातत्य विकसित करती है। इन बैठकों के बाद इनकी समीक्षा के लिए 8 अगस्त को सभी संभाग प्रमुखों की एक गुगल मीट आयोजित की गई। इसमें अब तक की बैठकों के बारे में उनके अनुभव जाने गए एवं माह के शेष समय के लिए एक कार्यक्रम दिया गया। इस कार्यक्रम में सभी स्वयंसेवकों से व्यक्तिगत सम्पर्क की दायित्वाधीन स्वयंसेवकों को साप्ताहिक रिपोर्ट देने के लिए कहा गया। बताया गया कि हर स्वयंसेवक को प्रतिदिन एक घंटा शाखा के निमित्त देना है एवं अपने शिक्षक व सहयोगियों से नियमित सम्पर्क रखना है। संभाग प्रमुख अपने प्रांत प्रमुखों व मंडल प्रमुखों के सहयोग से यह सुनिश्चित करेंगे कि सभी स्वयंसेवक इस कार्यक्रम में संलग्न हों एवं प्रति सप्ताह इस बाबत कितने स्वयंसेवकों से बात हुई इसकी जानकारी केन्द्र को देंगे।

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की वेबिनार एवं बैठकें

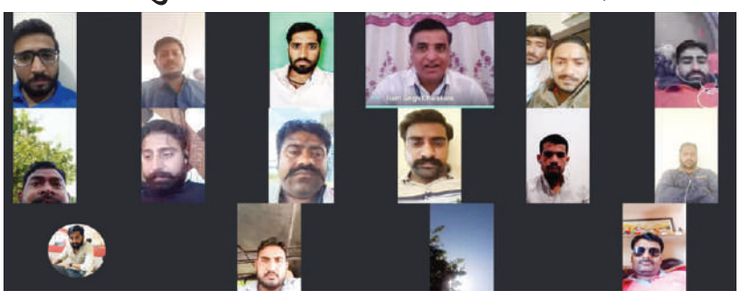

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा ऑनलाइन मार्गदर्शन कार्यशालाएं निरन्तर जारी है। सूचना तकनीक क्षेत्र में विभिन्न अवसरों की जानकारी हेतु चल रही श्रृंखला में 8 अगस्त की सायं 6 बजे Role of Bussiness Analyst in IT Field विषय पर कार्यशाला रखी गई जिमें मनींदरसिंह गोला ने बिजनेस एनालिस्ट क्या होता है, क्या करता है एवं इसके लिए क्या अर्हताएं होती हैं, आदि विषयों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इससे पहले 2 अगस्त को बीकानेर जिले के पूर्व छात्र नेताओं की एक गूगल मीट रखी गई जिसमें बीकानेर जिले के 30 से अधिक पूर्व एवं वर्तमान छात्र नेता जुड़े। दुर्गादास जयंती के दिन हुई इस बैठक में सर्वप्रथम दुर्गादास जी का पुण्य स्मरण किया गया। बीकानेर टीम के सहयोगी जुगलसिंह बेलासर ने सबका परिचय दिया। केन्द्रीय टीम के सदस्य रामसिंह चरकड़ा ने फाउंडेशन द्वारा पूर्व छात्र नेताओं के साथ किए जाने वाले कार्य का परिचय दिया। फाउंडेशन का सामान्य परिचय दिया गया। पूर्व छात्र नेताओं से अपनी नेतृत्व क्षमता को जीवित रखने एवं उसका यथास्थान उपयोग करने का आग्रह किया गया। वर्तमान छात्र नेताओं से भी महाविद्यालयों में अधिकतम युवाओं का प्रवेश करवाने में सहयोग करने का आग्रह किया गया। 8 अगस्त को फाउंडेशन के सहयोगियों की एक गूगल मीट रखी गई। बैठक में विगत एक माह में हुए कार्य की समीक्षा की गई। बैठक में तय किया गया कि अपने-अपने क्षेत्र में सभी सहयोगियों से निरन्तर सम्पर्क रखा जाए। केन्द्रीय स्तर पर सभी सहयोगियों की माह के प्रथम एवं तृतीय रविवार को बैठक आयोजित करने की बात की गई। जिला स्तर पर ऑनलाईन सम्पर्क के माध्यम से विभिन्न वर्गों की बैठक नियमित रखने का भी आग्रह किया गया। सीकार की श्रीमाधोपुर व धोद के सहयोगियों की गुगल मीट की गई। जैसलमेर, भीलवाड़ा व नागौर के सहयोगियों की भी बैठक हुई।

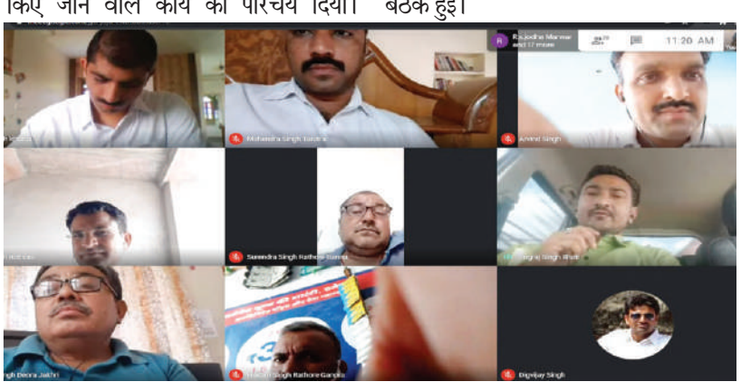

मेड़ता में सर्वसमाज की अनुकरणीय पहल

मेड़ता शहर पुरातन धरोहरों का शहर है। यहां राव दूदा, जयमलजी और मीराबाई की स्मृतियां संग्रहित हैं। मेड़ता नगरपालिका द्वारा जनता से छिपकर बिना प्रस्ताव लिए ही दूदा सागर पर निर्मित चौपाटी का नामकरण इंदिरा गांधी चौपाटी रख उद्घाटन करवाने की योजना बनाई। 3 अगस्त को मेड़ता शहर का सर्वसमाज चारभुजा छात्रावास की प्रबंधन समिति के नेतृत्व में संगठित हुआ एवं नगरपालिका के इस कृत्य का विरोध करते हुए उपखण्ड कार्यालय के समक्ष एकत्र हुआ। प्रशासन को चेतावनी दी गई कि शाम तक चौपाटी का नाम राव दूदा के नाम पर ही न रखने पर मेड़ता शहर को बंद किया जाएगा। अंत में प्रशासन के साथ वार्ता के बाद निर्णय लिया गया कि चौपाटी का नाम राव दूदा चौपाटी किया जाएगा एवं नगरपालिका बोर्ड की अगली बैठक में तत्संबंधी प्रस्ताव लिया जाएगा। नगरपालिका के कार्यकारी अधिकारी द्वारा इस संबंध में प्रेस विज्ञप्ति भी जारी की गई।

श्रवणसिंह बगड़ी प्रदेश मंत्री नियुक्त

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय टीम के सहयोगी श्रवणसिंह बगड़ी को भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी में प्रदेश मंत्री नियुक्त किया गया है। श्रवणसिंह लम्बे समय से भारतीय जनता युवा मोर्चा में कार्यरत रहे हैं।

माननीय संघ प्रमुख श्री का प्रवास कार्यक्रम

मार्च माह में दम्पति शिविर के लिए माननीय संघ प्रमुख श्री जयपुर से बाड़मेर पधारे थे। तब से लगातार बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में ही निवासरत हैं। इस बीच एक बार चिकित्सकीय कारणों से जोधपुर का प्रवास किया एवं एक बार जैसलमेर पधारे। एक बार जसोल भी पधारे। विगत 26 जुलाई को माननीय संघ प्रमुख श्री जोधपुर पधारे, मार्ग में कुछ समय के लिए गुगड़ी रुके एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक किशोरसिंह झालामलिया से मिलकर उनकी कुशल क्षेम जानी। जोधपुर में 2 दिन यही बनाड़ रोड स्थित कार्यालय 'तनायन' में निवास किया। इस दौरान कार्यालय की व्यवस्था बाबत चर्चा हुई एवं स्थानीय स्वयंसेवकों से मिले। 28 जुलाई को प्रातः अजमेर के लिए रवाना हुए। वहां कुछ चिकित्सकीय परामर्श लिया एवं प्रांत प्रमुख शिवदयाल सिंह खुड़ी के आवास पर स्थानीय स्वयंसेवकों से मिले। 28 की शाम जयपुर पहुंचे एवं आगामी 1 अगस्त की सुबह तक वहीं रुके। लंबे समय बाद जयपुर पधारने के कारण जयपुर में निवासरत स्वयंसेवक संघ प्रमुख श्री से मिलने आए। 30 जुलाई को पूर्व संघ प्रमुख नारायण सिंह रेड़ा की जयंती जयपुर के स्वयंसेवकों के साथ ही मनाई। 1 अगस्त की प्रातः जयपुर से रवाना होकर कुचामन पहुंचे एवं कुचामन स्थित संभागीय कार्यालय में संभाग के स्वयंसेवकों से मिले। 2 अगस्त को प्रातः कुचामन से आसरवा होते हुए नागौर पहुंचे एवं नागौर प्रांत प्रमुख उगमसिंह के आवास पर नागौर में निवासरत स्वयंसेवकों से संवाद किया। नागौर से पहले नगवाड़ा गए एवं वहां वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह नगवाड़ा के घर सभी स्वयंसेवकों से मिले। 2 की शाम तक जोधपुर पधारे एवं जोधपुर की तनायन शाखा द्वारा आयोजित दुर्गादास जयंती कार्यक्रम में अपना आशीर्वाद प्रदान किया। 3 अगस्त को प्रातः इसी शाखा द्वारा आयोजित रक्षा बंधन कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम के उपरान्त बाड़मेर के लिए प्रस्थान किया एवं वहां 11.15 बजे आयोजित रक्षा बंधन कार्यक्रम में शामिल हुए। बाड़मेर में प्रवास के दौरान संघ के स्वयंसेवकों द्वारा अपनी सुविधा के अनुसार एकाधिक दिन के लिए आश्रम में रुककर माननीय संघ प्रमुख श्री का मार्गदर्शन लेने का क्रम निरन्तर जारी है।

संपादकीय

सात्विक त्याग और शाखा

त्याग और बलिदान हमारी क्षात्र परम्परा का आधार है। इससे भी आगे कहें तो भारतीय संस्कृति का मूल उसकी त्याग और बलिदान मूलक क्षात्र परम्परा में समाहित है। इस प्रकार त्याग और बलिदान के अभाव में क्षत्रियत्व की बात करना भी बेमानी है इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने अपने साहित्य में स्थान-स्थान पर त्याग की महिमा बताई है। उन्होंने सात्विक त्याग शब्द का स्थान-स्थान पर प्रयोग किया है। उनके अनुसार सात्विकता के अभाव में त्याग त्याग नहीं रहता बल्कि व्यापार हो जाता है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'समाज चरित्र' में लिखा है कि त्याग एक प्रकार का विसर्जन है, जिसमें दाता के किसी स्वार्थ की पूर्ति न हो। जिस त्याग के बदले में प्रतिष्ठा, सम्मान, राजनीतिक अथवा सामाजिक लाभ अथवा किसी अन्य प्रकार के हित की आकांक्षा हो वह त्याग के रूप में पाखंड है। पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखित ये वाक्य एक प्रकार से उनके द्वारा उल्लेखित सात्विक त्याग की परिभाषा है। हमारे में से अनेक लोगों ने इन पंक्तियों को पूर्व में भी पढ़ा होगा, अनेक बार पढ़ा होगा लेकिन क्या इनमें उल्लेखित शब्दों पर गंभीरता से विचार किया है? पहले ही वाक्य में लिखा है कि त्याग एक प्रकार का विसर्जन है। विसर्जन का अर्थ छोड़ना होता है। जिसे हम छोड़ देते है वह हमारा नहीं रहता, किसी भी दृष्टिकोण से हमारा नहीं रहता। विचार करें क्या हम जिस त्याग की बात करते हैं, क्या वह ऐसा विसर्जन है। इस पंक्ति से आगे पूज्य श्री ने उन सब प्राप्तियों का उल्लेख किया है जिन्हें प्रायः हम बूरी नहीं मानते। हमारे त्याग के बदले हम किसी आर्थिक हित का संपादन सोचते हैं तब तो हम उसे बूरा मानते हैं लेकिन यदि त्याग के बदले प्रतिष्ठा मिलती है तो हम स्वीकार कर ही लेते हैं। सम्मान मिलता है तो उसे भी बूरा नहीं मानते बल्कि सम्मान प्राप्ति के लिए प्रयास भी कर ही लेते हैं। राजनीतिक लाभ को हो सकता है हम ठीक नहीं मानें लेकिन सामाजिक लाभ को तो हम लक्ष्य ही मानते हैं। हमारा प्रश्न भी हो सकता है कि हमारे द्वारा किए गए त्याग का यदि समाज का लाभ ही न मिले तो फिर उसका क्या फायदा? तो पूज्य श्री ने इसी पुस्तक के इसी प्रकरण में उल्लेख किया है कि 'आज का त्याग फायदे के कलंक से कलंकित है।'

इस प्रकार पूज्य तनसिंह जी के अनुसार हमारा कोई भी त्याग तब तक सात्विक नहीं है जब तक कि उसमें किसी भी प्रकार के प्रतिफल की चाह है। अब यहां हमारा एक गंभीर प्रश्न हो सकता है कि सात्विक त्याग की यह बात क्या व्यवहार में संभव है? क्या ऐसा हो सकता है कि किसी त्याग के बदले हमारी कोई चाह न हो? क्या हमारे मन में हमारे किसी त्याग के बदले मिलने वाली प्रशंसा को सुनकर गुदगुदी नहीं होती, ऐसे में क्या यह व्यवहारिक है कि हमारे में सात्विक त्याग की भावना उत्पन्न हो सके? तो पूज्य तनसिंह जी ने इस सात्विक त्याग को अर्जित करने का व्यवहारिक मार्ग भी प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा प्रदत्त कोई भी सिद्धान्त आकाश में महल नहीं है बल्कि धरातल पर ठोस नींव पर खड़े होने वाले व्यवहारिक सिद्धान्त हैं और उन्होंने इन्हें अर्जित करने के लिए मार्ग भी प्रदान किया है। पूज्य श्री ने लिखा है कि 'ऐसा भी कहा जा सकता है कि यह भावना निर्मित करना बहुत कठिन है, किन्तु मैं अपने निजी अनुभव से कह सकता हूं कि यह कार्य बहुत सरल है।' उन्होंने आगे लिखा कि देश व समाज के लिए खून बहाने को तत्पर लोगों से कहा जाए कि आप देश व समाज के लिए सप्ताह में एक दिन नियमित देना प्रारम्भ करें। उन्हें बुलाएं और एक कमरे में बंद कर देवें। दूसरे ही सप्ताह वे पूछने लगेंगे कि इस प्रकार के बचपने का क्या फायदा? जब तक फायदे का प्रश्न उठता रहेगा तब तक त्याग नहीं व्यापार है। उनका यह प्रश्न उभरना बंद न हो तब तक यह अभ्यास करते रहें। जिस दिन वे बिना प्रश्न किए सप्ताह का एक दिन देने को तैयार हो जाएं तब माना जाना चाहिए कि उनमें सात्विक त्याग अवतरित हो रहा है। पूज्य तनसिंह जी के व्यक्तित्व के साकार स्वरूप श्री क्षत्रिय युवक संघ ने उनके इस प्रयोग को शाखा के रूप में व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया है। 24 घंटे में से एक घंटा प्रतिदिन देना और वह भी बिना बहस के देने का नियमित और निरन्तर अभ्यास ही शाखा है। शाखा में होने वाले कार्यक्रमों से व्यक्तित्व के गठन होने की बात द्वितीयक है, उसका प्राथमिक उद्देश्य तो सात्विक त्याग की हमारे जीवन व्यवहार में प्रतिष्ठा करना ही है। प्रतिदिन समाज के लिए त्याग की मनोवृत्ति पैदा करने के लिए घर से बाहर निकल कर एक स्थान पर नियमित एक निश्चित समय पर एक घंटा बिताना सात्विक त्याग का ही अभ्यास है। लेकिन इस प्रक्रिया में हमारे अंतर में यदि यह प्रश्न उठता है कि ऐसा करने से क्या फायदा तो हमें यह समझना चाहिए कि हमने समाज को जो एक घंटा विसर्जित करने का निश्चय किया है, उस निश्चय में अभी खोट है। हम उस दिए हुए एक घंटे को भी हमारी इच्छा के अनुरूप उपयोग करना चाहते हैं, उस पर हमारा अधिकार जता रहे हैं। यदि हम हमारे जीवन का चौबीसवां हिस्सा भी बिना बहस नहीं दे पा रहे हैं तो अभी हम में त्याग उतरा नहीं है। लेकिन हम देखते है कि हम सात्विक त्याग की उपरोक्त विवेचना को समझे बिना भी शाखा में आते-आते अपना वह एक घंटा शिक्षक की ईच्छा अनुसार बिना बहस के अर्पित करने को तैयार हो जाते हैं। यही पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त मार्ग को विशेषता है कि इसमें हमारी जानकारी के बिना भी जीवन के बड़े-बड़े सिद्धान्त हमारे व्यवहार में उतर जाते हैं।

खरी-खरी

लोकतंत्र या गुलामी का तंत्र?

लोकतंत्रात्मक व्यवस्था को स्वतंत्रता से जोड़ा जाता है। सैद्धान्तिक रूप से यह माना जाता है कि यह वयस्क मताधिकार पर आधारित ऐसी व्यवस्था है जिसमें हर मतदाता स्वतंत्र रूप से अपने मत का प्रयोग कर व्यक्तिगत रूप से व्यवस्था द्वारा प्रदत्त अपने राजनीतिक अस्तित्व को अपने जनप्रतिनिधि को सुपुर्द करता है। इस प्रकार सैद्धान्तिक रूप से एक जनप्रतिनिधि उन सभी मतदाताओं की संयुक्त राजनीतिक शक्ति का न्यासी बनता है जिन्होंने उसे मत दिया है। इस प्रकार वह जनप्रतिनिधि उन सभी मतदाताओं की स्वतंत्रता व स्वाभिमान का भी न्यासी होता है। उन सभी मतदाताओं के स्वाभिमान की रक्षा का दायित्व भी उसका होता है। न्यासी कभी मालिक नहीं होता बल्कि उन लोगों के विश्वास का रखवाला होता है जिनके विश्वास ने उसे न्यासी बनाया है। इस प्रकार हमारे सभी जनप्रतिनिधि एक विधायक के रूप में, एक सांसद के रूप में, एक सरपंच के रूप, एक पार्षद के रूप में, पंच आदि के रूप में हमारे द्वारा जताए गए विश्वास के न्यासी होते हैं। यह लोकतंत्र का सैद्धान्तिक स्वरूप है और सुनने, पढ़ने और लिखने में बहुत ही सुन्दर लगता है। लेकिन इसका व्यवहारिक रूप कैसा है यह वर्तमान व्यवस्था में हमें दृष्टिगोचर हो रहा है। कोई भी जनप्रतिनिधि अपने आपको न्यासी नहीं मानता बल्कि चुनाव जीतते ही मालिक बन जाता है। वह अपने मतदाताओं से बात करते समय अपने आपको मालिक ही समझता है। लेकिन वही मतदाता उसके दयनीय स्वरूप को भी देखता है। वह देखता है कि उसका वह विश्वास चंद पैसों में बेचा और खरीदा जा रहा है और बेचने व खरीदने वाले यह स्वीकार भी नहीं करते कि वे उसके विश्वास को खरीद या बेच रहे हैं। वह देखता है कि उसका वह विश्वास किस प्रकार घोड़ों, बकरों आदि के विशेषणों से नवाजा जा रहा है। उन घोड़ों और बकरों को कैसे बाड़ों में बंद किया जा रहा है। खूंटों से इस प्रकार बांधा जा रहा है कि एक घोड़ा दूसरे से अकेले में मिल नहीं सकता। अपने परिवार से भी बाड़े के मालिक की व्यवस्था के तहत ही बात कर सकता है। उसकी हर गतिविधि उसी प्रकार निगरानी में है जिस प्रकार एक चोर की होती है। यह सब देखकर भी उस मतदाता से यही कहा जा रहा है कि लोकतंत्र गुलामों का तंत्र नहीं बल्कि स्वैच्छिक मतदान की स्वतंत्र व्यवस्था है। मतदाता अवश्य विचार करता होगा कि मतदान करते समय उस पर अनेक बंदिशे लगाई जाती हैं कि उसका मतदान गुप्त होना चाहिए। वह किसी को दिखाकर मतदान नहीं कर सकता। उसे प्रोत्साहित किया जाता है कि वह किसी प्रलोभन में मतदान न करें, व्यक्तिगत स्वार्थ को दरकिनार करे और वह देखता है कि उसके स्वतंत्र अस्तित्व की बदौलत चुना गया गुलाम किस प्रकार किसी व्यक्ति विशेष की ईच्छा का गुलाम है। पार्टी तंत्र के नाम पर किस प्रकार इस गुलामी को नीति संगत ठहराया जा रहा है। हर गुलाम अपनी गुलामी का उचित कारण बताकर अपनी उस गुलामी को नकार रहा है और अपने आपको स्वतंत्र सिद्ध करने के लिए खूंटों से बंधकर खूंटों को तोड़ने का नाटक कर रहा है। लेकिन यह सब देखकर भी वह मतदाता जिनके अस्तित्व के समर्पण के कारण उक्त गुलाम को यह गुलामी करने का अवसर मिला, टुकर-टुकर देखने को मजबूर है। इसी मजबूरी को वह सैद्धांतिक रूप से सुंदर दिखने वाले लोकतंत्र की व्यवहारिक नियति मानकर चुप रहता है और फिर ऐसे ही गुलामों को चुनने को होने वाले अगले नाटक में भाग लेने को तत्पर होता है।

लेकिन यहां एक प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या यह तंत्र की कमजोरी है। तंत्र का सैद्धान्तिक रूप जब इतना सुन्दर है तो उसका व्यवहारिक रूप इतना असुन्दर कैसे है? तो यहां यह उल्लेखनीय है कि तंत्र तो सभी सही ही होते हैं, लेकिन तंत्र अपने आप में कुछ नहीं करता। सिद्धान्त एक अमूर्त अवधारणा होती है जो उसे लागू करने वाले व्यक्ति में मूर्तिमान होती है। इसीलिए तंत्रों को बदलने की अपेक्षा व्यक्ति को बदलना आवश्यक होता है लेकिन आजकल के तथाकथित समझदार लोग अपने आपको बदले बिना तंत्र को बदलना चाहते हैं। क्योंकि उनका दृष्टिकोण ही बाहर की कमियों को देखने का होता है और इसीलिए वे अपने अंतर को बदले बिना, व्यक्ति को बदले बिना तंत्र को बदलने में तत्पर होते हैं और परिणाम वही ढाक के तीन पात होता है।

'छोटी सी साधना उपासना बन जाए'

(पेज एक से लगातार)

इन पर अधिकार जमाना चोर कर्म है। श्रेष्ठ लोगों को सदैव यह सूत्र याद रखना चाहिए। संघ का काम करते हुए कई बार सम्मान पाने की ईच्छा होती है, सम्मान कुछ करके पाना चाहिए। आप सब लोग सम्मान पाएं, यह हम भी चाहते हैं। भगवान भी चाहते हैं कि मेरी संतान को सम्मान मिले, वह मेरे समर्पित हो। पूज्य नारायणसिंह जी को यह सूत्र याद रहा। पूज्य तनसिंह जी द्वारा दिया गया गीता का ज्ञान उनके जीवन में उतरा, उनकी जयंती मनाने का यही एक कारण है। आप लोग इस कार्यक्रम को देख रहे हैं, शामिल हो रहे हैं तो पूज्य नारायणसिंह जी को याद रखें। उन्हें पूज्य तनसिंह जी ने जो दिया उसी पर निर्भर रहे, कहीं अन्यत्र नहीं गए। किसी साहित्य, महात्मा आदि के पास नहीं गए। एक निष्ठ होकर बिना भटके, साधना करते रहे। हम भी ऐसा ही करें, यही संघ की इच्छा है। संघ की इच्छा परमेश्वर की इच्छा है। तनसिंह जी ने हमको बताया कि संघ एक ईश्वरीय कार्य है। इस कार्य को करते रहने से जीवन में साधना उतरती है, सुख शांति का अवतरण होता है। जिनके सुख शांति का अवतरण होता है, वही सुख शांति दे सकता है। संघ की आप से यही अपेक्षा है। किसी से ईर्ष्या न करें, किसी की ईर्ष्या के पात्र न बनें। सुख और शांति का संदेश फैलाएं। लोग बहुत दुःखी हैं, उनके दुःख को महसूस करें, संवेदनाओं को सुनें और अनुभव करें ताकि लोगों के दुःख को दूर करने में प्रवृत्त हो सकें। सांघिक परम्परानुसार प्रारम्भ हुए इस कार्यक्रम में संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने पूज्य नारायणसिंह जी का जीवन परिचय बताते हुए कहा कि उनका जीवन साधारण से असाधारण बनने की कहानी है। सुदूर रेगिस्तान प्रदेश के छोटे से गांव में अत्यन्त साधारण राजपूत परिवार में जन्म, साधारण शिक्षा दीक्षा, साधारण नौकरी आदि के होते हुए भी उनके जीवन में आसाधारणताएं उतरीं और वे हम सबके आराध्य बन गए। मात्र 19 वर्ष की आयु में पूज्य तनसिंह जी के प्रति पूर्ण समर्पण के आसाधारण निर्णय ने उन्हें असाधारण बना दिया। परिवार में सबसे बड़े होते हुए विवाहित जीवन के बावजूद लगी हुई नौकरी छोड़कर पूज्य तनसिंह जी के पास 'जैसे रखोगे वैसे खुश ही रहेंगे' के भाव के साथ चले जाना और फिर बिना शिकायत जीवन भर इस निर्णय पर अडिग रहने ने उन्हें असाधारण बना दिया। यहां तक की छोटे भाईयों के विवाह तक में संघ कार्य से अन्यत्र व्यस्त होने के कारण शामिल न हो पाए। एक-एक वर्ष तक घर नहीं जाना और परिवार से भी किसी प्रकार की शिकायत न होने ने उन्हें असाधारण बना दिया। संसार उन पर परिवार की उपेक्षा का आरोप लगा सकता है, अपनी क्षमताओं का परिवार के लिए उपयोग न करने का आरोप लगा सकता है लेकिन क्षात्रधर्म का पालन करने वाले किस महापुरुष पर ऐसा आरोप नहीं लगाया जा सकता। क्या दुर्गादास, महाराणा प्रताप, हठी हमीर, सुजानसिंह शेखावत पर संसार यह अरोप नहीं लगा सकता? लेकिन क्षात्रधर्म संसार के आरोप की नहीं बल्कि अपने दायित्व की परवाह करने का मार्ग है और पूज्य नारायणसिंह जी का जीवन इस दायित्व के प्रति जागरुकता का संदेश है। हम उस संदेश को सुनें, समझे और अनुकरण करें यही उनकी जयंती मनाने की सार्थकता है। 30 जुलाई की शाम 6 से 7 बजे तक आयोजित इस कार्यक्रम में हजारों परिवार वर्चुअल माध्यम से जुड़े एवं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वर्चुअल माध्यम के साथ साथ अनेक शाखाओं में भौतिक कार्यक्रम के द्वारा भी पूज्य नारायण सिंहजी की जयंती मनाई गई। उदयपुर के ओस्तवाल नगर में संघ की पारिवारिक शाखा में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई जिसमें मेवाड़ - मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा, राजसमन्द प्रान्त प्रमुख फतह सिंह भटवाड़ा के अलावा शाखा के अन्य स्वयंसेवक भी मौजूद थे। इसी प्रकार रानीवाड़ा के 'श्री राजपूत छात्रावास' में स्वयंसेवको ने पुष्पांजलि कर कार्यक्रम में भाग लिया। जैसलमेर के फतेहगढ़ में मोढ़ा शाखा में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई जिसमें लगभग 32 स्वयंसेवक उपस्थित हुए। इसी क्रम में बालोतरा संभाग के सिणेर गांव में भी जयंती मनाई गई।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

(पृष्ठ एक का शेष)

अपने उत्तरदायित्व...

जोधपुर की तनायन शाखा द्वारा 3 अगस्त को प्रातः 6 बजे आयोजित रक्षा बंधन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त संदेश दिया। उन्होंने कहा कि रक्षा बंधन रक्षा करने के संकल्प का पर्व है। बाहर के विघ्नों से रक्षा एवं अंतर के विघ्नों से भी रक्षा। आज बाहर की रक्षा के लिए सेना, पुलिस आदि हैं। पूर्व काल में हमेशा युद्ध की आशंका बनी रहती थी। सदैव सभी प्रकार की रक्षा के लिए तैयार रहना पड़ता था। आज युग बदला है। शास्त्र का युग है, ज्ञान का युग है। यदि हम इसमें पीछे रहते हैं तो सबल होकर भी समाज, राष्ट्र, परिवार की रक्षा नहीं कर पाएंगे। इसीलिए आज केशरिया ध्वज की छत्र छाया में इसी प्रेरणा के साथ रक्षा बंधन मना रहे हैं श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी प्रेरणा का परिणाम है। आजादी के आंदोलन में लोगों ने संघर्ष कर राष्ट्र को स्वतंत्र कराया, लेकिन विचारणीय है कि हम कितने स्वतंत्र हैं। हमारे पूर्वजों ने अपना सर्वस्व बलिदान देकर इस राष्ट्र को बचाया, यदि वे ऐसा नहीं करते तो यह देश ही नहीं बचता तो फिर किसे स्वतंत्र कराते। आजादी के बाद हम सबके प्रतिनिधियों ने मिलकर संविधान बनाया, उसकी हमारे प्रति अनुकूलता प्रतिकूलता की परवाह किए बिना हम उसका पालन करने का अभ्यास करते हैं, एकत्रित होकर देश की परिस्थिति पर विचार करते हैं, उसकी रक्षा करते हैं। संघ इसका अभ्यास करवाता है। गीता में अभ्यास का संदेश है, साथ ही बीज के नाश न होने का भी स्पष्ट आश्वासन है। इसी आश्वसान के प्रकाश में हम निरन्तर अभ्यास करते हैं। पूर्वजों की जिन परम्पराओं में बदलाव की आवश्यकता महसूस होती है तो बदलाव भी करते हैं क्योंकि जो नहीं बदलता वह रूढ़िवादी होता है।

इसीलिए हम नियमित रूप से संघ सम्पर्क में रहें, संघ हमारे विकास के लिए जो गतिविधियां संचालित करता है, उनका पालन करें। यह नियमित और निरन्तर अभ्यास ही हमारे जीवन को बदलेगा। संघ का सामूहिक और सहयोगी जीवन निरन्तर हमें परमेश्वर की ओर बढ़ाता है। हमें इंसान बनाता है। हमारी महान कौम का मान रखने को तैयार करता है, हमारे आचरण से संसार को संदेश देने योग्य बनाता है। हम अनुशासन और उत्तरदायित्व के बोध के महत्व को समझते हुए माने कि मैं ऐरा गैरा नहीं हूं तब ही हम उत्तरदायित्व के बोध के रक्षा कर पाएंगे। सांघिक परम्परानुसार मनाए गए कार्यक्रम में सर्वप्रथम यज्ञ हुआ और सभी ने अपनी यज्ञोपवीत बदली। तदुपरांत ध्वजारोहण, प्रार्थना आदि हुई एवं सभी ने ध्वज के तथा अपने साथियों के राखी बांधी। (शेष पृष्ठ 6 पर)

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

'दुर्गादास जी थे पूज्य तनसिंह जी की प्रेरणा'

(पेज एक से लगातार)

जीवन की समस्त विशेषताओं का उपयोग अपने जीवन लक्ष्य के लिए करते हुए उन्होंने अपना जीवन दुर्गादास जी की तरह अर्पित किया। उन्होंने कहा कि 'करने आए कर न सके तो जीवन तरुवर व्यर्थ फले हैं।'

हम पूज्य तनसिंह जी अनुयायी हैं और पूज्य तनसिंह जी ने स्वयं को दुर्गादास जी का अनुयायी माना। इस प्रकार दुर्गादास जी हमारे लिए आदर्श हैं। हमारी साधना शनैः शनैः परिपक्व होकर परमेश्वर की ओर जा रही है। बचपन में हमारे भी तनसिंह जी की बातें समझ में नहीं आई लेकिन अब समझ में आता है कि संघ की साधना ही ईश्वर तक हमें पहुंचाएगी ऐसी मेरी मान्यता है। जयंती मनाना बड़ा काम नहीं है लेकिन ये औपचारिकताएं भी हमें प्रेरणा देती हैं। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणादायी बने, हम आत्म निरीक्षण करें और आकलन करते रहें कि हम कितना आगे बढ़ पा रहे हैं। अपने उद्बोधन के प्रारम्भ में दुर्गादास जी का जीवन परिचय देते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि औरंगजेब जैसे आततायी से अनथक संघर्ष मोल लेने की उस काल में दुर्गादास जी की कोई जिम्मेदारी नहीं थी। वे कहीं के शासक नहीं थे लेकिन उन्होंने स्वतः स्फूर्त दायित्व स्वीकार किया और उसे जीवन भर निभाया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकरसिंह महरोली ने कहा कि निर्भयता के गुण ने दुर्गादास जी को महत्वपूर्ण बना दिया और संघ का मार्ग भी निर्भयता का मार्ग है। यह निर्भयता ही हमें जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ाएगी। सांघिक परम्परानुसार पुष्पांजलि आदि के साथ इस कार्यक्रम में सीमित संख्या में स्वयंसेवक उपस्थित रहे एवं कोविड संकट के मद्देनजर समस्त नियमों का पालन किया गया। कार्यक्रम के बाद सभी ने साथ ही भोजन किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा त्याग और बलिदान के प्रतीक वीर दुर्गादास राठौड़ की जयंती देशभर में मनाई गई। मुम्बई प्रांत की सभी शाखाओ द्वारा गूगल मीट पर वर्चुअल बैठक रखकर संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ के सानिध्य में जयंती मनाई गई। जिसमे 100 से अधिक स्वयंसेवकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारंभ संघ परम्परा अनुसार मंगलाचरण से हुआ तत्पश्चात प्रार्थना व सहगीत करवाया गया। महाराष्ट्र संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाना द्वारा वीर शिरोमणि दुर्गादास राठौड़ का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया गया। केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने बताया कि वीर दुर्गादास का जीवन क्षत्रिय संस्कारों से भरे हुए चरित्रवान योद्धा का जीवन था। कार्यक्रम का संचालन देवीसिंह झलोड़ा द्वारा किया गया। महाराणा सांगा शाखा उदयपुर में दुर्गादास जयंती मेवाड़-वागड़ संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला की उपस्थिति में मनायी गई। डॉ. कमल सिंह बेमला ने दुर्गादास जी का जीवन परिचय दिया व भंवर सिंह बेमला ने कहा कि संघ हमें दुर्गादास जी जैसे बनाने की तैयारी कर रहा है। हम उनके जैसे बनने के लिए तैयार रहें। सभी ने आपस में एक दुसरे के रक्षा सुत्र भी बांधे। उदयपुर में वीरवर दुर्गादास जी की 382वीं जयंती ऑनलाइन वर्चुअल माध्यम से भी मनाई गई। डॉ. कमल सिंह बेमला, डॉ. नरसिंह परदेशी (इतिहासकार जलगांव वि.वि.महाराष्ट्र), तेजभंवर सिंह नटवाड़ा, प्रेमकरण बागावास, भारत सिंह दवाणा, कृष्णदेव सिंह दवाणा, हरिसिंह जी, चंद्रवीर सिंह करेलिया (अध्यक्ष मेवाड़ क्षत्रिय महासभा शहर उदयपुर), कमलेंद्र सिंह बेमला, भँवर सिंह बेमला, सोभाग सिंह चान्दसमा, भगत सिंह बेमला, मानसिंह तिलोरा, दिनेश करण दवाणा, अरुण सिंह बेमला ने अपने विचार प्रकट किये। सभी ने कोरोना की वजह से अपने घरो में ही वीरवर की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पुष्पांजलि अर्पित की।

इसी प्रकार सुरावा गांव में वडेसी माता मंदिर में जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। सभी ने दुर्गादासजी के संघर्षमयी जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। कावतरा गांव में भी जयन्ती समारोह मनाया गया जिसमें महावीर सिंह कावतरा ने जीवनी से रुबरु करवाया। जालोर के करड़ा, उचमत, पूरण गांव में भी जयंती मनाई गई। पाली प्रान्त के सोजत मंडल के सारंगवास गांव में दुर्गादास राठौड़ की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में कोविड 19 के नियमो की पालना करते हुवे 50 से कम स्वयंसेवक ही उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पाली प्रान्त प्रमुख मोहब्बतसिंह धींगाना और हीरसिंह लोड़ता ने सम्बोधित किया। रानी कस्बे में कोराना महामारी होने के कारण घरों में ही जयंती मनाई गई। बालोतरा शहर मे स्थित वीर दुर्गादास राजपूत बोर्डिंग में वीर दुर्गादास राठौड़ की जयन्ती संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक चन्दनसिंह चांदेसरा के सानिध्य मे मनाई गई। कार्यक्रम में काफी विशिष्टजनों ने भाग लिया। साथ ही आवासन मंडल बालोतरा मे प्रांत प्रमुख राणसिंह टापरा की उपस्थिति में जयंती मनाई गई। सरस्वती विद्या मंदिर वरिया मे वीरमसिह वरिया की उपस्थिति में, टापरा गांव के मां नागणेची मंदिर में, पाटोदी के जवाहर राजपूत हॉस्टल संस्थान में नगसिह हडमतनगर की उपस्थिति में, सिवाना के हरियाबाग नानेरी गोलिया में महाराज नृत्यगोपाल राम जी की उपस्थिति में, काठाड़ी के कानजी मामाजी के मन्दिर में संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी की उपस्थिति में, कुण्डल के नागणेची माता मंदिर में, पादरू के राजपूत छात्रावास में, गोलिया के मल्लीनाथ मन्दिर में वीर दुर्गादास राठौड़ जयंती मनाई गई। इसी क्रम में आयुवान निकेतन में 'साधना संगम संस्थान' कुचामन सिटी द्वारा दुर्गादास जयंती के उपलक्ष में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्थान के सचिव शिम्भु सिंह ने दुर्गादास जी के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला। संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री भगवत सिंह ने दुर्गादासजी द्वारा किए गए सामाजिक चेतना व तत्कालीन परिस्थितियों से संबंधित देशहित में किए गए कार्यों के बारे में जानकारी दी। वयोवृद्ध स्वयंसेवक हनुमान सिंह बिखरनिया ने संस्थान द्वारा संस्कार निर्माण के लिए किए जाने वाले कार्य यथा शिविर, शाखा, संपर्क अभियान, उत्सव मनाया जाना आदि के बारे में विस्तृत जानकारी से अवगत कराया। नागौर संभाग की ऑनलाइन शाखा में वीरवर दुर्गादास जयंती मनाई गई। मुख्य वक्ताओं में केन्द्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ तथा महाराष्ट्र संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाना रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जैसलमेर स्थित संभागीय कार्यालय 'तनाश्रम' की साप्ताहिक शाखा में वीर दुर्गादास राठौड़ जंयती का कार्यक्रम वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बैरसियाला के सान्निध्य में रखा गया। इसी तरह भाखरी गांव में वीर दुर्गादास जी की जयंती में भी जयंती मनाई गई। नारायणसिंह ने दुर्गादासजी पर दोहों का वाचन किया। इसके साथ ही देशभर में लगने वाली संघ शाखाओं में भी समाज चरित्र के आदर्श उदाहरण वीर दुर्गादासजी राठौड़ की जयंती मनाई गई जिसमें समाज बन्धु और स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

(पृष्ठ पांच से लगातार)

देशभर में संघ के स्वयंसेवको द्वारा रक्षाबंधन उत्सव मनाया गया। पाली प्रान्त के सोजत मण्डल के सारंगवास गांव में रक्षाबधंन कार्यक्रम में प्रार्थना के बाद सर्वप्रथम सभी ने एक दूसरे के राखी बांधी। इसके बाद संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हीरसिह लोड़ता ने कहा कि आज के जमाने मे हम बन्धन मुक्त जीवन जीना चाहते हैं जबकि श्रेष्ठ बन्धन के बिना बड़ा कार्य हो ही नहीं सकता। आज हम इतने स्वतंत्र हो गये हैं कि कई लोग परिवार के साथ तो क्या भाई-बहिन और पति-पत्नी के साथ भी नहीं रहना चाहते। चारों ओर बिखराव ही बिखराव हो रहा है। इस स्थिति में पूज्य श्री तनसिहजी ने 1946 में संघ रुपी राजमार्ग बनाया जिस पर चलकर हम अपने समाज की संस्कृति को बचा सकते हैं। मंडल प्रमुख शिवसिंह ढूंढा ने कहा कि सम्पूर्ण प्राणी मात्र की रक्षा का भार क्षत्रिय पर है। हम अपने कर्तव्य को समझें और संघमार्ग पर चल पड़ें इसी में हमारी भलाई है।' कार्यक्रम का संचालन बहादुर सिंह सारंगवास ने किया। इसी क्रम में रक्षाबंधन उत्सव महाराणा सांगा शाखा उदयपुर में भी मनाया गया जिसमें मेवाड़ - वागड़ संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला समेत कई स्वयंसेवक उपस्थित रहे। सभी ने आपस मे एक दूसरे के रक्षा सूत्र बांधे। कुचामन सिटी के आयुवान निकेतन में भी रक्षाबंधन पर्व मनाया गया जिसमें वयोवृद्ध स्वयंसेवक हनुमान सिंह बिखरनिया ने रक्षाबंधन उत्सव के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में सभी स्वयंसेवको ने आपस मे एक दूसरे का मुंह मीठा करवाकर राखी बांधी।

गुजरात में रक्षाबंधन एवं दुर्गादास जयंती का पर्व एक साथ ही मनाने की परम्परा रही है। इस अवसर पर यज्ञ कर यज्ञोपवीत भी बदली जाती है। इस बार भी भावनगर सहित गोहिलवाड़ संभाग के अनेक स्थानों, मध्य गुजरात संभाग में काणेटी सहित अनेक स्थानों एवं महेसाणा संभाग में भी कमाना आदि स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित होने के सामाचार है।

प्रतिभाएं

बडोड़ागांव (जैसलमेर) निवासी **जयश्री** पुत्री सुरेन्द्र सिंह ने आईसीएसई बोर्ड से 10वीं में 91 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

प्रतापगढ़ (जालोर) निवासी **किस्मत कंवर** पुत्री देवीसिंह ने 12वीं कला वर्ग में 82.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने संघ के तीन शिविर किए हैं।

सूर्यप्रतापसिंह शेखावत ने कक्षा 10वीं में 96.4 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

वरिष्ठ स्वयंसेवक चंदनसिंह बारू की पौत्री व रविन्द्रसिंह की पुत्री **देवयानी** ने 12वीं में 94 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

वरिष्ठ स्वयंसेवक चंदनसिंह बारू की पौत्री व महावीर सिंह की पुत्री **काव्यांजलि** ने 10वीं में 90 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पूरण (जालोर) निवासी **राजेन्द्रसिंह** पुत्र कल्याणसिंह ने 10वीं में 91 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने 4 शिविर भी किए हैं।

कचरास (नागौर) निवासी **अभयराज सिंह** पुत्र गोपालसिंह 10वीं में 90 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

भगतपुरा (सीकर) निवासी **शंभुसिंह** पुत्र संग्रामसिंह ने 10वीं में 91.67 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दुजांर (नागौर) निवासी **अरुण** **प्रताप सिंह** पुत्र दौलतसिंह ने 10वीं में 85.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

प्रेमसिंह पुत्र गणपतसिंह निवासी मेहुसर (बाड़मेर) ने 10वीं में 93.50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दीपेन्द्रसिंह पुत्र नारायणसिंह फुलिया (जैसलमेर) ने 10वीं में 90.50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

हिन्दूसिंह पुत्र जसरूपसिंह मूलाना (जैसलमेर) ने 10वीं में 89 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

जसवंतसिंह पुत्र पप्पूसिंह झोटड़ा (जालोर) ने 10वीं में 80.83 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दिव्या कंवर पुत्री धर्मसिंह महाबार (बाड़मेर) ने 10वीं 85.5 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सरण का खेड़ा (सिरोही) निवासी **राज्यवर्धन सिंह** पुत्र मालम सिंह ने 10वीं में 95.50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

खारिया (जैसलमेर) निवासी **महेशपालसिंह** पुत्र राजेन्द्रसिंह ने 12वीं 88.83 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

खुशी कंवर पुत्री दलवीर सिंह निवासी कानपुरिया (भीलवाड़ा) ने 10वीं में 95.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सरली (बाडमेर) निवासी **हिमांशी** पुत्री गौरुसिंह ने 10वीं में 82 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने 4 शिविर किए हैं।

लक्षिता शेखावत पुत्री वीरेन्द्रसिंह निवासी हुडील ने 10वीं में 94 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पीपली (अलवर) निवासी **सतेन्द्रसिंह** पुत्र दिनेश सिंह ने 12वीं 84 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

तनमय सिंह पुत्र बृजराजसिंह खारड़ा (भीलवाड़ा) ने 10वीं कक्षा में 87 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र का पूरा परिवार संघ से जुड़ा हुआ है।

फतेहपालसिंह पुत्र विरमसिंह निवासी वरिया (बाड़मेर) ने 10वीं में 85.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। बिरमसिंह संघ के स्वयंसेवक है।

राहड़ा (जोधपुर) निवासी **छोटूसिंह** पुत्र देवीसिंह ने 10वीं में 80.50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

हेमसिंह पुत्र चतरसिंह निवासी नवातला (बाड़मेर) ने 10वीं में 92.63 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पूजा कंवर पुत्री भूरसिंह निवासी गिराब (बाड़मेर) ने 12वीं में 87.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

संगीता कंवर पुत्री ओमसिंह निवासी गिराब (बाड़मेर) ने 10वीं में 82.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

नरेन्द्रसिंह पुत्र नींबसिंह बरियाड़ा ने 10वीं में 82 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

रविन्द्रसिंह पुत्र चंदनसिंह निवासी भालीखाल (बाड़मेर) ने 10वीं में प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने 6 शिविर कर रखे हैं।

महिपालसिंह पुत्र कालूसिंह निवासी छायण (जैसलमेर) ने 12वीं में 82.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

प्रिया कंवर पुत्री जयप्रताप सिंह निवासी सिरोही कला (जयपुर) ने 10वीं में 93 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

डिंपल राठौड़ पुत्री ओमसिंह निवासी वरिया (बाड़मेर) 10वीं में 82.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पूनम कंवर पुत्री राजेन्द्रसिंह निवासी अक्षयगढ (भीलवाड़ा) ने 12वीं में 82 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

नरेन्द्रसिंह पुत्र सवाईसिंह निवासी गोकुल (बीकानेर) ने 12वीं में 90.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने दो शिविर कर रखे हैं।

महेन्द्रसिंह पुत्र मूलसिंह निवासी भालीखाल (बाड़मेर) ने 10वीं में 85.17 अंक हासिल किए हैं।

अधीनता में स्वतंत्रता

सोचता हूं कि
चल पड़ूं कहीं
इन बन्धनों से कोसों दूर
पर कहां?
जीवन से मृत्यु की ओर?
पुनः उसी कीचड़ में
जो छोड़कर ही तो आज हूं?
हां, यह बन्धन मुक्ति की हूक
उड़ा करती है अनन्त कल्पना मे
और मांगती है एक स्वतंत्र जीवन।
पर डरता हूं कल्पना मात्र से
जो स्वच्छंदता की मीठी मनुहारें कर
छोड़ देती गहरे दलदल में
जहां से न उठना संभव है
और न ही तासीरमय जीना।
तभी अचानक लगता है
छविगृह को एक झटका और
टूट जाते हैं कल्पना की तार।
और अन्तःस्थल से होता है
तेरे बन्धन में जकड़ जाने का आह्वान
इस अधीनता मे ही पाता हूं
जीवन की सच्ची स्वतंत्रता और
समस्त शंकाओं का समाधान।

भवानीसिंह पिलोदा को पुत्र शोक

संघ के स्वयंसेवक हिम्मतसिंह पिलोदा के छोटे भाई एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक भवानीसिंह पिलोदा के पुत्र **रघुवीरसिंह** का 9 अगस्त को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता है एवं परमेश्वर से उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

रघुवीरसिंह

गजेन्द्रसिंह दौलतगढ का देहावसान

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **गजेन्द्रसिंह दौलतगढ़** का 29 जुलाई को देहावसान हो गया। 1969 में जोगणिया माता शिविर में संघ के सम्पर्क में आए। उन्होंने कुल 15 शिविर किए। एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने जौहर स्मृति संस्थान, महाराणा कुंभा ट्रस्ट भीलवाड़ा, मेवाड़ क्षत्रिय महासभा में अनेक पदों पर सेवारत रहे। विगत 6-7 वर्षों में बीमारी की वजह से भौतिक रूप से सक्रिय नहीं थे। पथप्रेरक परिवार उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता है एवं परमेश्वर से उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

गजेन्द्रसिंह दौलतगढ़

नाहर सिंह करणवा का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध **नाहरसिंह जी करणवा** का 3 अगस्त को देहावसान हो गया। 15 अप्रेल 1932 को जन्में नाहरसिंह जी ने 1949 में जोधपुर में पहला शिविर किया। बाद में नौकरी के कारण सम्पर्क नहीं रहा। सेवानिवृत्ति के बाद पुनः सम्पर्क में आए। उन्होंने कुल 17 शिविर किए।

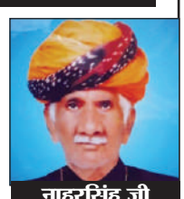
नाहरसिंह जी करणवा

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की केन्द्रीय टीम के सदस्य एवं हमारे सहयोगी

श्री श्रवणसिंह बगड़ी

के

भारतीय जनता पार्टी की **प्रदेश कार्यकारिणी** में **प्रदेश मंत्री** बनने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छु :

समस्त सहयोगी

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org